सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 अप्रेल)

मरकुस 14:38 जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।

इन परीक्षाओं का चरित्र कैसा होगा, यह हम तब तक स्पष्ट रूप से नहीं जान सकते जब तक की वे हम पर आ न पड़ें। क्योंकि यदि हम इन परीक्षाओं के बारे में पहले से जान जाते तो फिर वे केवल हल्की परीक्षाएँ होतीं। इसीलिये, सचेत रहो और निरन्तर प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तैयार रहना ही सबसे सुरक्षित तरीका है; क्योंकि तुम्हारा विरोधी, शैतान, गर्जने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। वह आपके कमजोर क्षणों को जानता है, और उनका फायदा उठाने के लिए तैयार है। हममें से प्रत्येक को हमारे हृदयों में आत्मा के अनुग्रहों की आवश्यकता होगी, साथ ही साथ यदि हम जय पायें, तो उसके लिये "आवश्यकता के समय हमारी सहायता के लिए" प्रभु के अनुग्रह की भी जरूरत होगी। यहाँ अंग्रेजी के एक गीत की कुछ पंक्तियाँ हैं -

"हे मेरे प्राण, अपने मन की रक्षा कर,

दस हजार शत्रु तेरे विरुद्ध उठ खड़े होंगे;

पाप की सेनाएँ चारों ओर से दबाव डाल रही है,

तुमको इनाम से दूर ले जाने के लिये" R3179:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 अप्रेल)

गलातियों 06:10 इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

एक मसीही को अपने समय और सुविधा की कीमत पर सभी मनुष्यों की भलाई करने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिए, लेकिन उसे भाइयों के लिये अपना जीवन बलिदान करने के लिये तैयार रहना चाहिए - उसे दिन - प्रतिदिन अपने जीवन को बलिदान करने के अवसरों को ढूँढना चाहिए, मतलब सत्य के सन्देश को दूसरों तक पहुँचाने अपना समय देना, या प्रभु के भाइयों की किसी भी तरह से कोई मदद करना, परमेश्वर के सारे हथियार पहनना और बुरे दिन में दृढ़ता से खड़े रहना। `Z.'03-121` R3180:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 अप्रेल)

रोमियों 13:12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।

अन्धकार के काम कोई भी ऐसे काम होंगे जो पूरी छानबीन करने पर खड़े न रह सके; जो कि यदि, नया युग पूरी तरह से स्थापित हो चुका हो, तो उसकी रोशनी के सामने मंजूरी न पा सके। आइए हम ये याद रखें की हम, उस नए युग के हैं, पुराने युग के नहीं हैं, और इसलिए, हमें अवश्य वहाँ की नागरिकता और ज्योति के

राजकुमार के प्रति हमारी जिम्मेवारियों के अनुसार जीना चाहिए और हमें अन्धकार के राजा, जो की शैतान है; उसके कार्यों और उसके मार्गों के विरुद्ध जीना चाहिए। `Z.'03-122` R3181:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 अप्रेल)

रोमियों 13:13 जैसा दिन को शोभा देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें;

हम में से प्रत्येक को यह ध्यान रखना चाहिए कि, हम ईमानदार रहें, न केवल रुपये, पैसों के मामलों में बल्कि अपने पड़ोसियों के साथ व्यवहार में भी, अपने भाईयों के साथ व्यवहार में, और इन सबसे ऊपर अपने परमेश्वर और अपने विश्वास की गवाही देने में! हमारी ईमानदारी को परखने के लिए परिक्षा रखी गई है, और जो भी परमेश्वर के पक्ष से ज्यादा मनुष्यों के पक्ष से प्रेम करते हैं, और जो भी बेईमानी के साथ किसी झूठ की गवाही देने को तैयार हैं, वे अपने ही झूठ को सौंपे जाएंगे, वे खुद ही अपने अनंत हित को हानि पहुंचाएंगे, और अन्ततः राज्य के लिए खुद को अयोग्य साबित करेंगे -- फिर चाहे वे दूसरी किसी भी वस्तु के लिए योग्य क्यों न ठहरें। `Z.'03-122` R3181:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 अप्रेल)

भजन संहिता 63:5,6 मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूंगा। जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा, तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा।

प्रार्थना केवल एक विशेषाधिकार नहीं बल्कि हमारी अनिवार्य आवश्यकता है; जिसके बिना हमारी मसीही उन्नति नहीं हो सकती है। जो कोई धन्यवाद या आराधना या दया के पिता से बात-चित करने की इच्छा को खो देता है, तो उसके लिए यह निश्चित है कि, वह पुत्रत्व की आत्मा को खो रहा है, और उसको चाहिए की वह तुरन्त इस बाधा को हटाने की जो की ये दुनिया, शरीर और शैतान है प्रार्थना करे। हम पर अपने चरित्र और अपनी योजना को ज्यादा से ज्यादा प्रगट करने के द्‌वारा प्रभु जितना अधिक भरोसा होने का अतिरिक्त प्रमाण हमें देते हैं, उसी अनुपात में हमारी आराधना और प्रार्थना कई गुणा बढ़ जानी चाहिए बजाये इसके की वे घट जाएँ। यदि हमारा ह्रदय अच्छी उपजाऊ जमीन है, तो बहुतायत में ज्यादा से ज्यादा फल लाएगा। `Z.'96-161` R2004:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 अप्रेल)

1 पतरस 4:16 यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्ज़ित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करें।

सच्चाई की सेवा में हमारी जो ऊर्जा जाती है, उसके कारण हमें जो भी बिमारी या असुविधा आती है, वे हमारी वफ़ादारी और प्रेम को साबित करने के लिए हमारे पिता की अनुमति से आती है। क्योंकि यदि हमारे ऊपर इन क्लेशों की जिम्मेदारियाँ न हो या किसी चमत्कार के द्‌वारा इन क्लेशों से छुटकारा मिल जाए तो परमेश्वर की सेवा के लिए हम कोई भी बलिदान की कीमत नहीं चुका पाएंगे, और सच्चाई के लिए धीरज से सहने की हमारी इच्छा की जाँच नहीं हो पाएगी। तो इस प्रकार हर एक दर्द और घाव हमारे शरीर में और भावनाओं में जो लगता है, और सच्चाई के लिए जब हमें सामाजिक रूप से बहिष्कार कर दिया जाता है, तो ये सब आत्मा की

गवाही बन जाता है। और हमारी वफादारी की साक्षी बन जाती है। और इन सब तरह के क्लेशों में हमें बड़ी मात्रा में आनन्दित होना चाहिए जैसे कि, हमारे प्रभु और हमारे प्रेरित पतरस कहते हैं। `Z.'96-166` R2007:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 अप्रेल)

फिलिप्पियों 4:19 मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।

यदि आपके पास बड़े आनन्द के सुसमाचार को सुनाने के लिए जोशीला उत्साह नहीं है, तो पूरी लगन से और विश्वासी होकर और निरन्तर इसके लिए प्रार्थना करें, और इसे पाने का पूरा प्रयत्न करें, और तब जल्द ही आपके पास वो उत्साह होगा। यदि आपके पास सुसमाचार के प्रति उत्साह और प्रेम है, लेकिन इसे प्रस्तुत करने की क्षमता नहीं है, तो आपके पास जितनी क्षमता है उसे पूरी तरह से उपयोग में लाते हुए, क्षमता पाने के लिए प्रार्थना करें। यदि आपके पास उत्साह है और क्षमता है, लेकिन अवसर की कमी है, तो इसे प्रार्थना में जल्द से जल्द प्रभु के पास लेकर जाएँ, उन्हें बताएं कि, जितने अवसर आपके पास हैं, उन्हें आप विश्वासी होकर पूरी तरह से उपयोग में ला रहे हैं। उसके बाद और अवसरों को ध्यान से देखते रहें, और आपकी पहुँच के अन्दर जो भी छोटा से छोटा अवसर मिले, उसके लिए अपने हाथ को ढ़ीला न छोड़ें। `Z.'96-163` R2006:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 अप्रेल)

इब्रानियों 10:38 यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उससे प्रसन्न न होगा।

शुरू में थोड़ा सा पीछे हटना, बलिदान के सकेत रास्ते से पीछे हटने की तरह है। केवल आप पीछे की चीज़ों को जो बीत चुकी है, उस पर ध्यान कर रहे हैं, और इस तरह से सकेत रास्ते में आप की रफ़्तार कम हो जाती है, और आप का झुकाव शरीर की लालसाओं पर पर चला जाता है, और हम सत्य से समझौता करने लगते हैं। इस तरह से हम शैतान को मौका देते हैं कि, वह हमारी कमजोरियों को पहचान कर, लालच में ले आये। और हम अपने प्रथम प्रेम जो कि परमेश्वर हैं, उसको भूल जाते हैं, और हमारा उत्साह परमेश्वर की सेवा में कम होने लगता है, और हम सत्य और उसकी आत्मा से धीरे - धीरे मुड़ जाते हैं। और इस तरह से, परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा मार्गदर्शक नहीं हो पाता है। `Z.'95-93` R1799:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 अप्रेल)

1 कुरिन्थियों 9:24 क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो।

हमें विजय पाने के लिये न केवल आत्मिक युद्ध के हथियार पहनना है, पर वीरता से लड़ाई को जीतना भी है। हमारे आँखों और शरीर की अभिलाषाओं और जीविका के घमण्ड और सभी धार्मिकता और शुद्धता के शत्रुओं के खिलाफ एक आक्रमक युद्ध लड़ना है। हमारी प्रेरणा धार्मिकता, सच्चाई और परमेश्वर के लिए प्रेम होनी

चाहिए। नहीं तो हम कभी भी विजयी नहीं होंगे। प्रेम ही अकेली वो चीज़ है, जो हमें प्राण देने तक विश्वासी बनाए रखेगी, और सभी सन्तों के साथ ज्योति की मिरास में मिलने का अवसर देगी। जब जोश से भरा हुआ प्रेम, हमारे ह्रदय में राज्य करेगा तो, इसका मतलब हुआ कि हमारा ह्रदय पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित है। और इसका मतलब यह हुआ कि, दस में से नौ हिस्से का युद्ध हम पहले से ही जीत चुके हैं। लेकिन फिर भी जैसा की प्रेरित यहूदा कहते हैं -- यहूदा 1:21 वचन में "अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो", सारी सतर्कता और प्रार्थना और जोश के साथ में हमें परमेश्वर के प्रेम में बने रहना चाहिए; और जहाँ प्रेम बहुतायत में होगा, वहाँ अनुग्रह भी बहुतायत में होगा। `Z.'95-93` R1799:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 अप्रेल)

1 पतरस 5:6 इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

नम्रता के मार्ग पर चलना, मानवीय आकांक्षाओं को निरन्तर जांचते रहना और बलिदान को तब तक वेदी पर रखना, जब तक कि, वो पूरी तरह से भस्म न हो जाए -- ये सब वाकई में कोई आसान मामला नहीं है। लेकिन हमें ऊंचे बुलावे के प्रति अपने उद्धार को डरते और कांपते हुए पक्का करना जरुरी है, नहीं तो हम ऊंचे बुलावे के इनाम को प्राप्त करने के लिए आवश्यक योग्यता में कम ठहरेंगे। इस इनाम का वादा उन सभी विश्वासी जयवन्त लोगों से किया गया है, जो हमारे धन्य कप्तान के पदचिन्हों पर बारिकी से चल रहे हैं। हमारे धन्य कप्तान नम्र और मन के दीन थे। इस प्रकार से जब हम नम्र और विश्वासी होते हैं, तभी प्रभु अपने नाम को दूसरों तक पहुँचाने का चुना हुआ पात्र हमें बनाते हैं। जब हम स्वंय की आत्मा

से खाली हो जाते हैं, परमेश्वर हमें अपनी आत्मा और अपनी सच्चाई के साथ भर देते हैं, और हम सेनाओं के यहोवा में और उनकी सामर्थ की शक्ति में बलवन्त होकर, आगे बढ़कर, क्रूस के योद्धा की तरह वीरतापूर्वक सेवा के कार्यों को कर सकते हैं। `Z.'93-7` R1487:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 अप्रेल)

रोमियों 13:13 जैसा दिन को सुहाता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में।

किसी को पैसा का नशा है, धन का नशा है; दूसरों को व्यापार का नशा है;अन्य लोगों को कपड़ों का;किसी को गाना बजाना का; किसी को कला का नशा है; लेकिन प्रभु के लोग होने के नाते, जिन्हें नई दिन की झलक मिल चुकी है, और परमेश्वर के उस महान कार्य की झलक मिल चुकी है जिसे उस दिन में पूरा किया जाएगा, हमारे हृदय परमेश्वर के कार्यों में इस तरह से डूब जाने चाहिए कि, ये सब मामले जो दूसरों को उचित और ठीक लगते हैं, क्योंकि वे सांसारिक लोग हैं -- क्योंकि वे हमारी तरह जागे हुए नहीं हैं, क्योंकि वे भविष्य को ऐसे नहीं देखते जैसा हम देखते हैं -- इसलिए ये सारे सांसारिक मामले हमारे मार्ग से और हमारे विचारों से भी दूर होने चाहिए। `Z.'03-123` R3181:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 अप्रेल)

1 कुरिन्थियों 10:16, 17 वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं? इसलिये, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं।

एक ही प्याला है, हालांकि उसमें कई अंगूरों का रस है, भले ही यह एक ही रोटी है, हालांकि यह कई गेहुओं से है। इतने गेहूँ के दाने खुद की विशेषता और खुद के जीवन को नहीं रख सकते अगर वे दूसरों के लिए रोटी बनेंगे। अंगूर भी अपने आप को अंगूर के रूप में बनाए नहीं रख सकते, अगर वे जीवन देने वाली आत्मा का गठन करते हैं; और इस तरह से हम प्रेरित पौलुस के इस वचन की सुन्दरता को देखते हैं कि प्रभु के लोग उस एक ही प्याले और एक ही रोटी में उनके साथ सहभागी हैं... इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है कि, हम उस नए स्वाभाव को प्राप्त कर सकें, जब तक कि हम प्रभु के न्योते को स्वीकार करें कि, उसी एक प्याले से पीएं, और प्रभु की तरह उनके देह के सदस्य के रूप में तोड़े जाएँ। और उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम प्रभु के साथ गाड़े गए, और इस प्रकार से उनके साथ पुनरुथान पाने की महिमा, आदर और अमरता पाएंगे । `Z.'01-76` R2772:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना **(13** अप्रेल**)**

यूहन्ना 6:53 यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं।

प्रिय प्रभु, आपके शुद्ध स्वभाव को जिसे आपने हमारे लिए बलिदान कर दिया - हमें धर्मी ठहराने के लिये, उसके मूल्य को हम अति आनन्दित होकर खाते हैं (हमारी आवश्यकताओं के लिए आपके बलिदान के मूल्य को अपनाते हैं)। हम और भी आनन्दित होकर, आपके साथ आपके दुःख के कटोरे में सहभागी होंगे, यह महसूस करते हुए की, आपके साथ दुःख उठाना एक आशीषित विशेषाधिकार है, ताकि उचित समय में हम आपके साथ राज्य भी कर सकें। हम और भी आनन्दित होकर आपकी मृत्यु में जुड़ जायेंगे, ताकि अनंत भविष्य में हम आपके साथ जी सकें, और आपके जैसा बन सकें और आपकी दुल्हन के रूप में आपके प्रेम और आपकी महिमा के सहभागी हो पाएं। ओह! ताकि हम न केवल इन चिन्हों में हिस्सा लेने में विश्वासी हों, बल्कि सचमुच में इनको निभाने में भी विश्वासी हों। हे धन्य प्रभु, हम आपके वचनों को हमसे यह कहते हुए सुनते हैं कि, "तुम सचमुच मेरा कटोरा पियोगे और मेरे बपतिस्मा के साथ बपतिस्मा लोगे"। प्रभु, हम अपने आपसे यह बलिदान करने में सक्षम नहीं हैं; लेकिन आपका अनुग्रह ही हमारे लिए बहुत है, क्योंकि हम अभी और सदा के लिए पूरी तरह से पुरे आपके हैं। `Z.'99-51` R2436:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 अप्रेल)

यशायाह 53:12 उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया॥

हर एक जो प्रभु यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलता है, उसे "गतसमनी" के अनुभवों से होकर जाना आवश्यक है, ताकि हर एक चेले को अपने गुरु के अनुभवों का स्वाद मिल जाए। हमें सच्चाई के भाईयों की सेवा का कोई भी अवसर नहीं खोना है, क्योंकि वे परमेश्वर के "छोटे बच्चे" हैं और मसीह के देह के सदस्य हैं। हमें सावधान रहना है कि, हम मेमने के पीछे चलने वालों के ऊपर आने वाली निन्दा में और जोड़नेवाली, यानि हम उसकी निन्दा करने वाले न बन जाएँ। बल्की हमें उन्हें जो निन्दा से होकर जा रहें हैं, उनके साथ सहानुभूति दिखानी है, एक दूसरे का क्रूस उठाने में एक दूसरे की मदद करनी है। एक दूसरे की परेशानियों, परिक्षाओं में जो इस सकेत मार्ग में हमें मिलेगी, मदद करते जाना है। इसी तरह से हम कलवरी जा रहे, यीशु का क्रूस उठाकर उनकी मदद कर रहें हैं, ये अवसर की सराहना कर सकते हैं। `Z.'99-125` R2473:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 अप्रेल)

लूका 23:46 हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।

हमारे प्रिय उद्धारकर्ता ने पूरे विश्वास के साथ परमपिता की ओर देखा, और पूरे विश्वास के साथ ये ऐलान किया कि, उन्होंने अपना पूरा जीवन और भविष्य की सारी धन्य आशा परमपिता के प्रेम और उनके सामर्थ के लिए समर्पित कर दी है, -- ताकि उनका जीवन और धन्य आशा परमपिता की योजना और उनके वचन के

साथ पूरा तालमेल रख पाए। और हम जो अपने स्वामी के पदचिन्हों पर चल रहे हैं, हमें भी ऐसा ही करना है। विश्वास के द्वारा, आगे की ओर देखते हुए; और अपने सबसे कठिन घण्टों में भी अपना सब कुछ परमपिता के प्रति समर्पित कर देना है, जिन्होंने अपने प्रेम को हमारे प्रति प्रकट किया है, न ही केवल अपने पुत्र को हमारे उद्धारक के रूप में तोहफा देकर, बल्कि हमारे इस पूरे सफर में -- हमारी दिव्य देखभाल करते हुए, और इसके साथ उनके बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादों को हमको दिया है जो हमको मजबूती, आराम और सान्तवना देते हैं । `Z.'99-128` R2475:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 अप्रेल)

मलाकी 3:17 सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि जो दिन मैंने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे वरन मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मैं उन से ऐसी कोमलता करूंगा जैसी कोई अपने सेवा करने वाले पुत्र से करे।

अगर प्रभु यीशु मसीह ने हमें अपनी दुल्हन खोजने के लिए भेजा होता तो हम उनको इकठ्ठा कर लेते जिनको प्रभु यीशु मसीह अस्वीकार कर देते क्योंकि वे उनके लायक नहीं थे। हम अयोग्य हैं, किसी का ह्रदय पढ़ने में, पर परमेश्वर सब का ह्रदय पढ़ सकते हैं। यह विचार हमें सबके प्रति बहुत नम्र, सौम्य, करना चाहिए और हमें ज्यादा भरोसा परमेश्वर पर प्रभु यीशु मसीह के साथ रखना है, और उनके मार्ग - दर्शन पर निर्भर करना है। जिस प्रकार भविष्यद्वक्ता शमूएल ने परमेश्वर के ऊपर निर्भर किया दाऊद राजा का अभिषेक करने से पहले। `Z.'03-223` R3227:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 अप्रेल)

1 यूहन्ना 2:27 तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है।

दाऊद के अभिषेक में परमेश्वर की आशीष और शक्ति जुडी हुई थी -- पर कैसे, हम नहीं समझ पाते -- दाऊद को ज्ञान आदि में बढ़ने में मदद मिलती थी और जिस कार्यालय के लिए उसका अभिषेक किया गया था उसकी जिम्मेवारियों के लिए दाऊद को तैयार किया जा रहा था। जो अभिषेक कलीसिया को प्रभु के स्वीकार जाने के बाद मिलता है, क्या इसे हम छाया के रूप में नहीं ले सकते? हमारा अभिषेक शारीरिक नहीं है, और न ही आशीषें अस्थायी चरित्र की है: यह अभिषेक हमें नई सृष्टि के रूप में मिलता है ताकि हम अनुग्रह और ज्ञान और प्रेम में बढ़ें; और नई सृष्टि के रूप में, शीघ्र ही हम, पहले पुनरुथान में परिपूर्ण किये जाएँ और हमारे प्रभु और स्वामी जो हमारे सर हैं, उनके साथ सिंहासन पर आएं। `Z.'03-223` R3227:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 अप्रेल)

1 पतरस 4:12,13 हे प्रियों, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझ कर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।

एक अमित्रतापूर्ण संसार में हम अपने स्वामी की तरह केवल निन्दा को पाने की उम्मीद कर सकते हैं, क्योंकि सेवक अपने प्रभु से बड़ा नहीं है। दुनिया, शरीर और शैतान हमारा विरोध करते हैं: बहुत सारी लड़ाईयां हमें अपने आप से करनी है बिना भय के, और शैतान के बहुत सारे अग्नि रूपी तीर धर्मी के ऊपर साधे जाते हैं। लेकिन दुःख और गंभीर परीक्षाओं के तहत आत्मा का सुरक्षित नजरिया क्या है? क्या यह परमेश्वर के सामने शान्त रहना नहीं है, हमारे हर मामले में परमेश्वर के मार्गदर्शन और इच्छा के प्रति इन्तज़ार करना है, कुछ चीज़ों को छूने से पहले, यह मानते हुए की वे बहुत जटिल है। इसलिए दाऊद राजा, भजन संहिता 39:2 वचन में यह बोलते हुए सलाह देते हैं कि, "मैं मौन धारण कर गूंगा बन गया, और भलाई की ओर से भी चुप्पी साधे रहा”। [यहां तक कि ऐसा करने या कहने से जो मेरी दृष्टि में अच्छा लग रहा था]। `Z.'96-31` R1937:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 अप्रेल)

मत्ती 12:34,35 हे सांप के बच्चों, तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है। भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।

हमारी पहली प्राथमिकता तब, अपने हृदय को महत्त्व देना होनी चाहिए -- ताकि इस हृदय का लगाव और झुकाव पूरी तरह से दिव्य अनुग्रह के नियंत्रण में रहे; ताकि सच्चाई और धार्मिकता का हर एक सिद्धांत, हृदय में हर वक़्त राज्य करे; ताकि न्याय, करुणा, परोपकार, भाईयों के प्रति भलाई, प्रेम, विश्वास, नम्रता, संयम,

परमेश्वर और प्रभु यीशु के प्रति उच्चतम श्रद्धा वाला भय, और पवित्रता की सभी सुंदरताओं के प्रति जोश से भरा हुआ प्रेम, यही सब हमारे जीवन को चलाने वाले दृढ़ता से स्थापित सिद्धान्त होने चाहिए। अगर ये सिद्धान्त दृढ़ रहे, ह्रदय में स्थापित रहें, तब मन के अच्छे भण्डार से मुँह से सच्चाई, सौम्यता, ज्ञान और अनुग्रह की बातें निकलेगी। `Z.'96-30` R1937:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 अप्रेल)

लूका 16:10 जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है।

इसका मतलब यह नहीं है कि, परमेश्वर के लोगों को घर या दुकान में अपने प्रतिदिन के जीवन की सामान्य दिनचर्या से संतुष्ट होना चाहिए, और वे खुद से ये कहें कि, "परमेश्वर मेरे परिश्रम को स्वीकार करते हैं जैसे कि यह उनके लिये ही किसी और रूप में जो उनको भाता है किया गया हो", लेकिन इसका मतलब यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को दिन-प्रतिदिन ध्यान से अपने सांसारिक कर्तव्यों और दायित्वों को जाँचना चाहिए, कि वह किस तरह से वह सांसारिक वस्तुओं और सांसारिक हितों की सेवा में से अपने क्षण, घंटे या दिन को न्यायपूर्ण और उचित रीती से काट सकता है, और कैसे उस समय को अब आत्मिक चीजों और खुद या दूसरों की आत्मिक हितों के लिए बलिदान कर सकता है। एक समर्पित ह्रदय, बलिदान करने वाला याजक, वह है जो अपने जीवन के हर क्षण को जैसे वे तेजी से बीतते हैं, जितना सम्भव हो सके, पिता का कार्य करने में लगाएगा। `Z.'03-407` R3266:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 अप्रेल)

इब्रानियों 4:15,16 क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी तरह परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे॥

लालसा के क्षणों में, हमें अपने हृदय को महान स्वामी के पास ले जाना चाहिए, पूरे विश्वास के आश्वासन के साथ, प्रभु के प्रेम, ज्ञान और उनकी हमारे को सहायता करने की क्षमता और उनकी इच्छा को पहचानते हुए कि, जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है। उनके पास आवश्यकता के समय जब हम सहायता मांगने के लिए जाते हैं, तब यह पक्का है की हम प्रभु की सलाह और मदद और मजबूती पाते हैं, धार्मिकता, सच्चाई, शुद्धता और प्रेम के लिए; और इस तरह हम प्रति घण्टे, प्रतिदिन और अन्त में जयवन्त हो सकें। `Z.'98-23` R2249:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 अप्रेल)

मत्ती 12:36 मै तुम से कहता हूं, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक बात का लेखा देंगे।

यदि हमारे मार्गों को प्रतिदिन जांचने में, जो कि एक मसीही का कर्तव्य है, हम ये पाते हैं कि, हमारे कोई खास शब्दों के कारण प्रभु का निरादर हुआ है, तो हमें ये

याद रखना चाहिए कि हम अनुग्रह के सिंहासन के सामने अपने वकील के नाम पर जा सकते हैं, हमारे स्वर्गीय पिता को हम अपनी गलती के एहसास के बारे में बता सकते हैं, उनके नाम का आदर नहीं करने के प्रति, अपना गहरा पछतावा दिखा सकते हैं, हमने पवित्र चालचलन और बातचीत नहीं की, इसके प्रति पछतावा दिखा सकते हैं, और नम्रतापूर्वक विनती कर सकते हैं कि, ये पाप हमारे को दोषी न ठहराए, बल्कि मसीह के द्वारा हमारी सफाई के अनुग्रहकारी प्रावधान के द्वारा यह पाप मिट जाएँ, नम्रतापूर्वक यह दावा करें प्रभु यीशु के बहुमुल्य लहू में ही हमारी सारी आशा और भरोसा है। इस प्रकार से हमें हर एक निकम्मी बात का हिसाब देना चाहिए; और हमारे शब्दों में पछतावा होना चाहिए, ताकि विश्वास के द्वारा मसीह के मूल्य को लागू करने के द्वारा पूरा होने के कारण हम अपने पापों से मुक्त हो जाएँ। `Z.'96-32` R1938:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 अप्रेल)

लूका 8:15 पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं॥

हर कोई जो बलिदान करने वाला होगा, उसे अवश्य मन का दीन, विनम्र, सिखाया जानेवाला होना चाहिए, अन्यथा बहुत जल्द ही वह मार्ग से हट जाएगा। उसे अवश्य धीरज से सम्बंधित प्रभु के अनुग्रह को अपने में बढ़ाना सीखना चाहिए, क्योंकि निश्चित रूप से खुद को इनकार करना और अन्याय के लिए खुद को समर्पण करने के लिए धीरज की आवश्यकता होती है, जहां प्रभु के कारणों को या उनके लोगों को हानि किये बिना, इस अन्याय से बचने के लिए कोई और तरीका नहीं होता। इसका मतलब भाईचारे की भलाई को अपने अन्दर बढ़ाने से भी है और एक शब्द में अगर

कहा जाए तो, हमारे हृदय और जीवन में परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा को बढ़ाना; खासकर प्रेम को, जिसको एक बड़ी और जयवन्त वाली मात्रा में प्राप्त किया जाना चाहिए, इससे पहले की हमने इस धरती पर बलिदान करने के अपने सांसारिक कार्य को पूरा किया हो।`Z.'03-408` R3267:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 अप्रेल)

रोमियों 15:2 हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिये प्रसन्न करे कि उसकी उन्नति हो।

राज-पदधारी याजकों के सदस्य के लिए यह सबक है कि, उनके कार्यालय, रोजगार, स्वर्गीय बुलावे का वर्तमान में मुख्य उद्देश्य है-- बलिदान करना...एक दूसरे प्रकार की सेवा है, वह ये है कि, हमें हमारे अपने मार्गों या योजनाओं, हमारे अपने तरीकों या प्राथमिकताओं का इनकार करना है या उन्हें त्याग देना है और शान्ति को बनाए रखने के लिए दूसरों की योजनाओं, उनकी प्राथमिकताओं को स्वीकार करना है, लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि, शाही याजक सेवा के इस रूप को नहीं पहचान पाते हैं। फिर चाहे ये केवल निजी प्राथमिकता को त्यागने का मामला हो! और हमें यकीन है कि, प्रभु अपनी इच्छा के अनुसार इस मामले को एक तरीके या दूसरे तरीके से पूरा करना चाहेंगे। हम शान्ति के हित के लिए, दूसरों की इच्छा के सामने अपनी प्राथमिकताओं का बलिदान कर सकते हैं, यदि हम पाएं कि, ऐसा मार्ग अपनाने से कुछ अच्छा प्राप्त किया जा सकता है। `Z.'03-406,407` R3265:3; 3266:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 अप्रेल)

इब्रानियों 11:6 विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो," ऐसा लगता है कि जो भी प्रभु के चेले हैं, उनके मसीही चालचलन और अनुभव में शुरू से लेकर अन्त तक प्रभु का उनसे बर्ताव उनके विश्वास के अनुसार होता है।...विश्वास तब, जब लगे कि प्रभु का ध्यान हम पर नहीं है; विश्वास तब, जब चीज़ें हमारे आत्मिक और सांसारिक जीवन में समृद्धि की ओर जा रही हों; और उतना ही मजबूत विश्वास तब, जब बहाव और परिस्थितयाँ सब हमारे विरुद्ध जाती सी लगे। वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है, वह यह विश्वास है, जो कि सब तरह की अवस्थाओं में परमेश्वर की भलाई और विश्वसनीयता पर दृढ़ भरोसे के साथ प्रभु की ओर ऊपर देखें और यह महसूस करें कि, परमेश्वर के वादे के अनुसार, अन्ततः सब चीज़ें मिलकर हमारे लिए भलाई ही को उत्पन्न करेगी, क्योंकि हम उनके लोग हैं। `Z.'00-139` R2627:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 अप्रेल)

इब्रानियों 4:10 क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है।

इस्राएली व्यवस्था के अनुसार सब्त या विश्राम का एक दिन होता था जिसका पालन वे पूरी पवित्रता के साथ किया करते थे। लेकिन प्रेम की व्यवस्था सचमुच में हमारे पुरे समय को नियंत्रित करती है; हफ्ते के सातों दिन हमें प्रभु, अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना है। और हफ्ते के सातों दिन हमें अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम करना है; और हफ्ते के सातों दिन हमें विश्राम भी करना है -- अपने कार्यों से विश्राम -- मसीह में जो कार्य पूरे हो गए हैं, उसमें विश्वास के द्वारा विश्राम करना है -- परमेश्वर के प्रेम में विश्राम करना है -- परमेश्वर की शान्ति में विश्राम करना है जो सारी समझ से परे है और वही शान्ति हमारे ह्रदय में लगातार राज्य करती है। `Z.'02-205` R3039:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 अप्रेल)

फिलिप्पियों 2:5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।

मसीह का मन होना निःसंदेह व्यवस्था के अनुसार प्रयास करने की एक आवश्यकता है -- मसीह का मन एक ऐसा मन है जो नम्रता और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा के प्रति, जिसे की परमेश्वर की महान युगों की दिव्य योजना में व्यक्त किया गया है, अपने आप को पूरी तरह से समर्पित करता है, क्योंकि यह मन परमेश्वर के मन में अंत का जो चित्र है उसे देख सकता है, उसके पीछे की बुद्धिमानी की सराहना कर सकता है। यदि जो मन मसीह यीशु में था, अगर हम उसी मन से पूरी तरह से भरे हैं, तो हम भी उनके जैसे, अपने आपको सांसारिक मामलों की उलझनों से बचाकर रखने की पूरी चाहत रखेंगें, और प्रभु की सेवा करने के लिए

जितना संभव हो सके हमारे समय को खाली रखेंगे, और फिर प्रभु की सेवा करने के लिए अपनी पूरी ऊर्जा, क्षमता और कोशिश लगा देंगे। `Z.'02-265` R3070:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 अप्रेल)

रोमियों 5:3-5 हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज। ओर धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; और आशा से लज्ज़ा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

हमें धीरज की जरुरत है, जो केवल क्लेशों के द्वारा ही बढ़ता है। हमें विश्वास की जरुरत है जो केवल अनिवार्य आवश्यकताओं के द्वारा ही बढ़ता है। जब हम प्रतिनिधि बनकर, सिंहासन पर बैठेंगे तो दूसरों की कमजोरियों को समझने के लिए अनुभवों की जरुरत है। हमारे लिए अभी के अनुभवों का सबक ये है कि, हमें बुराई को बुराई से नहीं पर भलाई से जीतना है। `Z.'03-348` R3238:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 अप्रेल)

भजन संहिता 91:15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।

अपनी सारी पीड़ाओं और दुखों को प्रार्थना में परमेश्वर के पास ले जाना हमारे लिए एक आशीषित विशेष अधिकार है; "क्योंकि उनको पता है कि जीवन के उन कष्टों में से कड़वाहट को कैसे चुसना है"। परमेश्वर जीवन के उन कष्टों में से कड़वाहट को इस प्रकार से चूसते हैं - हमें अनुभवों के द्वारा यह दिखाकर की दुनिया की सब चीज़ें व्यर्थ हैं और वे हमारी आत्मा की लालसाओं को संतुष्ट करने में या हमारे घायल मन को सुकुन पहुंचाने में अयोग्य हैं। फिर ये ख्याल आता है कि, भले ही ये अनुभव कितने ही दुखदायी हों, ये सब जल्द समाप्त हो जायेंगे; और अगर हम इन कड़वे अनुभवों को उनका कार्य करते रहने की अनुमति दें, तो ये कड़वे अनुभव बाद में हम में चैन के साथ धार्मिकता का प्रतिफल लायेंगे और हममें मजबूत और श्रेष्ठ चरित्र को बढ़ायेंगे, अनुशासन के द्वारा हमारे चरित्र को आत्म -संयमी बनायेंगे, ध्यान से सोच -विचार करने वाला बनायेंगे, कष्टों को धीरज से सहना सिखायेंगे और प्रेम भरी वफ़ादारी और विश्वसनीयता और परमेश्वर में भरोसे को बढ़ायेंगे। `Z.'96-31` R1937:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 अप्रेल)

1 पतरस 2:9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।

हमारे इस ऊपरी बुलावे का यही उद्देश्य है कि, जो ज्योति हमें मिली है, उसे हम चमकने दें। यदि हम ज्योति को चमकने नहीं देते हैं, तो हम इस सच्चाई के लिए

योग्य नहीं हैं। और यह सच्चाई जो एक खजाने की तरह है, हमसे ले ली जायेगी और हम अन्धकार में छोड़ दिए जाएंगे। यदि वाकई में हमने, इस सच्चाई को ग्रहण किया है और पूरी तरह से अपने आप को परमेश्वर को समर्पित कर दिया है, तब आइए हम अपने आप से पूछें, हम परमेश्वर की प्रशंसा को दिखाने के लिए क्या कर रहे हैं, जिन्होंने हमें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में लाया है? क्या हम इस सच्चाई के बारे में अपने पड़ोसियों को, जो दूर या पास हैं, उनको बता रहे हैं? क्या हम वाकई में पूरे दावे के साथ एक गीत (All for Jesus, all for Jesus) की इन पंक्तियों को कह सकते हैं:-

सब यीशु के लिए, सब यीशु के लिए -

मेरे लिए उनका छुड़ौती वाला बलिदान;

मेरी सारी सोच, और सारे शब्द और सारी क्रियाएं,

मेरे सारे दिन और सारे घंटे उनके लिए"? `Z.'03-165` R3199:6 आमीन